Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Siri Santinaha Chariyam

Folder No.	002966
Granth Name	Siri Santinaha Chariyam
Author	Devchandsuri, Dharmdhurandharsuri
Publisher	B L Institute of Indology Delhi
Edition	1
Year	1996
Pages	1016

सिरिसान्तिनाह चरियम्

फोल्डर नं.	००२९६६
ग्रन्थ	सिरिसान्तिनाह चरियम्
लेखक	देवचन्दसूरि, धर्मधुरन्दरसूरि
प्रकाशक	बी एल इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्डॉलॉजी
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९९६
पृष्ठ	१०१६

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
गंधसमप्पणं
प्रस्तावना
सम्पादकीय
सिरिसंतिनाहचरियं
- मंगलाचरणं ---------- १
- पुव्वकइवंदणा सुजणदुज्जणविवेगो य ---------- २
- सिरिसंतिनाहस्स संखेवओदुवालसभववण्णणं ---------- ३

पढम बितिय तइय भवग्गहणाइं ---------- ४
- पढमभववण्णणे कविलकहाणयं ---------- ७
- विज्जाहरस्स आगमणं ---------- १३
- इंदुसेणं बिंदुसेणामं पुव्वभववण्णणं ---------- १४
- मुणिदेसणा ---------- १५
- मंगलकलसकहाणयं ---------- २०
- मंगलकलसस्स पुव्वभववण्मणँ ---------- ५५
- इंदुसेणं बिंदुसेणाणं पुव्वभववण्मणं ---------- ६४
- इंदुसेण बिंदुसेणाणं पच्छायावो ---------- ६८
- इंदुसेण बिंदुसेणाम पव्वज्जामोक्खगमणं य ---------- ६९

चउत्थ-पंचम भवग्गहणाइं ---------- ७०
- असणिघोसाईणं पुव्वभववण्णण ---------- १२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मच्छोयरकहाणयं ---------- १२६
मच्छोयरस्स पुव्वभववण्णणं ---------- १७४
छट्ठ-सत्तमभवग्गहणाइं ---------- १८८
मुणिदेसणा ---------- १९३
मित्ताणंदाईमं कहाणयं ---------- १९५
नाणगब्भस्सकहाणंय ---------- २०२
असोगसिरीए पुव्वभववण्मँ ---------- २३२
मायंदिदारयाणं कहामयं ---------- २४६
कणयसिरीए पुव्वजम्मवुत्तंतं ---------- २७५
नरसिंघकुमरस्स कहाणयं ---------- २८१
कणयसिरीए संजमग्गहणं ---------- ३११
अट्ठम-नवम भवग्गहणाइं ---------- ३२७
तित्थयरदेसणा ---------- ३३५
अमयंबनिवस्स कहाणयं---------- ३३८
फुल्लबडुयस्स कहाणयं ---------- ३६६
पक्खइणराहिवस्स कहाणयं ---------- ३७३
देवरायईणं भाऊणं कहाणयं ---------- ३८४
उज्झइयाईणं चउण्हं सुण्हाणं बुद्धिपरिक्खणं ---------- ३८६
चउण्हं सुण्हाणं बुद्धिपरीक्खणं ---------- ३८८
दसमेक्कारसभवग्गहणाइं ---------- ४१४
जुज्झंतआणं तंबचूडाणं पुव्वभववण्णँ ---------- ४२४
जुज्झंताणं तंबचूडाणं विज्जाहराहिट्ठियया ---------- ४२८
चंदतिलयसूरितिलयाण पुव्वभववण्णणँ ---------- ४३३
चंदतिलयसूरतिलयाण भविस्सवण्णणँ---------- ४४१
सीहरायरायवुत्तंतं ---------- ४४३
सीहरहरण्णो वुत्तंतं ---------- ४४५
सीहरहरण्णो पुव्वभववुत्तंतं ---------- ४४९
दुण्हं पक्खीणं वेरसंबंधवण्णणँ ---------- ४५६
देववुत्तंतं ---------- ४५८
दुण्हं पक्खीणं पत्थणा ---------- ४६०
सूरस्स रायस्स कहाणयं ---------- ४६६
बारसमं भवग्गहणं ---------- ५२९
सिरिसंति जिणिंदस्स देसणा ---------- ५७६
खंदिलकुलपुत्तयस्स कहाणयं ---------- ५७७
गुणधम्मस्स कहाणयं ---------- ५८०
सिरिसंति जिणिंदस्स देसणा ---------- ६२०
अग्गिसम्मस्स बंभणस्स कहाणयं ---------- ६२१
गंधव्वनागदत्तस्स अक्खामयं ---------- ६३९
भाणुदत्तस्स अक्खाणयं ---------- ६५१
माहवकुमारस्स अक्खामयं ---------- ६५७
सिरिसंतिजिणिंदस्स देसणा ---------- ६६७
धणसत्थाहस्स अक्खाणयं ---------- ६७०
जमपासपाणस्स अक्खाणयं ---------- ६७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुण्हं मित्ताणं अक्खाणयं ---------- ६८२
सच्चस्स अक्खाणयं ---------- ६८४
मेरुणो गामउडस्स अक्खाणयं ---------- ६९३
जिणदाससावगस्स अक्खाणयं ---------- ६९५
करालपिंगस्स पुरोहियस्स अक्खाणयं ---------- ६९९
सीलवईअ सीलस्स रक्खणं---------- ७०३
सीलवईअ पुव्वभववुत्तंतं ---------- ७२३
सुलससावगस्स अक्खाणयं ---------- ७३२
सूरिभयवंताण निव्वेयकारणं ---------- ७७३
सुलससावगस्स पुव्वभववुत्तंतं---------- ७७८
कोडुंबियसयंभुदेवस्स अक्खामयं ---------- ७८१
सिरिसंतिजिणिंदस्स देसणा ---------- ७८७
रायजियसत्तुणो अक्खामयं ---------- ७९०
निच्चमंडियाए दीवसीहाए अक्खाणयं ---------- ७९२
सिरिसंतिजिणिंदस्स देसणा ---------- ७९४
कोडुंबियसमिद्धदत्तस्स अक्खाणयं ---------- ७९४
सीहसावयस्स अक्खाणयं ---------- ७९९
वणिणो गंगदत्तस्स अक्खाणयं ---------- ८०२
जिणचंद सावयस्स अक्खामयं ---------- ८०५
सिरिसंति जिणिंदस्स देसणा ---------- ८०९
रण्णो सूरपालस्स अक्खआणयं ---------- ८११
रण्णो सूरपालस्स पुव्वभववुत्तंतं ---------- ८३४
सावगस्स सुद्दगस्स अक्खआणयं ---------- ८३९
सिरिसंतिजिणिंदस्स देसणा ---------- ८७४
सिरिसंतिजिणिंदेहिं तित्थट्ठवणा ---------- ८७५
पढमगणहरस्स चक्काउमुहमुणिंदस्स देसणा ---------- ८७८
सिरिसंतिजिणिंदस्स परिवारवण्णणं ---------- ८८१
सिरिसंतिजिणिंदस्स णिव्वाणं ---------- ८८४
सिरिदेवचंदसूरीण पत्थणा ---------- ८९५
प्रशस्ति ---------- ८९७
परिशिष्टम्
प्रथमं परिशिष्टम् ---------- ९०४
द्वितीयं परिशिष्टम् ---------- ९३७
तृतीयं परिशिष्टम् ---------- ९५१
चतुर्थ परिशिष्टम् ---------- ९५२
पञ्चम परिशिष्टम् ---------- ९५२
षष्ठ परिशिष्टम् ---------- ९५५
सप्तम परिशिष्टम् ---------- ९५५
शुद्धिपत्रकम् ---------- ९५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org